गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण २२

जर्मन लेखक गूठे ने कहा है, "केवल वही अपनी स्वतन्त्रता और अपने अस्तित्व का अधिकारी होता है जो नित्यप्रति उन्हें फिर से जीतता है।" प्रतिदिन नई प्रेरणा के साथ योगाभ्यास करो। स्वतन्त्रता प्राप्ति का अर्थ यह नहीं है कि बस काम ख़त्म और अब से तुम्हें फिर कभी किसी भी बात की चिन्ता नहीं करनी होगी। स्वतन्त्रता को पोषित करना ही होता है। तुम्हें हर एक दिन स्वतन्त्रता के अनुभव को नवीन करना है। तुम्हारा जीवन तुम्हारा है, इसमें सन्देह नहीं। फिर भी, तुम्ह इसें बार-बार अपना बनाना है। तुम्हें इस अनुबन्ध को हर दिन नया करना है। अन्यथा, यह पुराना हो जाता है; और कौन जाने, हो सकता है कहीं कोई कमी रह गई हो? अतः, जीवन के साथ तुम्हारा जो अनुबन्ध है, तुम्हें उसका बार-बार नवीनीकरण करते रहना होगा।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय ३ "योग में दृढ़ता," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. ४६।